मंगलवार

33 साल से देहरादून का विश्वास

29 जुलाई 2025

- देहरादून
- वर्ष 33
- अंक 173
- पृष्ठ 8
- मूल्य ₹ 1.00

दूनवैलीमेल

सांध्य दैनिक

आर.एन.आई. : 59626/94

email: doonvalley_news@yahoo.com

Website: dunvalleymail.com

डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

डीएम ने कानूनगो को किया सस्पेंड

●शासकीय पत्रावलियों को लम्बित रखने का है मामला

संवाददाता

देहरादून। जिलाधिकारी सविन बंसल ने ओदशों की नाफरमानी तथा शासकीय कार्यों की पत्रावली वर्षों से लम्बित रखने पर सम्बधित राजस्व कानूनगो को निलम्बित कर दिया गया है।

आज यहां जिलाधिकारी सविन बंसल ने ओदशों की नाफरमानी तथा शासकीय कार्यों की पत्रावली वर्षों से लम्बित रखने पर सम्बधित राजस्व कानूनगो को निलम्बित कर दिया है। इससे लापरवाह कार्मिकों को सख्त संदेश दिया है। इस कड़े एक्शन से जहां भूचाल आ गया है वहीं लापरवाह कार्मिकों में खलबली मच गई है। कई कार्मिकों को निलम्बन का डर सताने लगा है। दरअसल जनता दर्शन कार्यक्रम में गांधी रोड निवासी रविन्द्र सिंह ने डीएम को फरियाद लगाकर बताया कि उनकी भूमि का धारा 28 अन्तर्गत 16 मई 2018 को कलक्टर ने आदेश पारित किये थे। तथा तहसील में परवाना प्राप्त हुआ था, जिसे आरके द्वारा आर-6 में 2023 में दर्ज करा दिया था तथा दिसम्बर 2023 में कानूनगो माजरा को प्राप्ति करा दिया था किन्तु अभी तक क्रियान्वयन नक्शा दुरूस्ती नही किया गया है, तहसील के कई चक्कर लगाने पर भी नक्शा दुरूस्त नही किया गया है। उक्त प्रकरण पर डीएम ने आदेशों की नाफरमानी पर सम्बन्धित राजस्व कानूनगो के निलम्बन की पत्रावली प्रस्तुत करने के निर्देश तहसीलदार सदर को दिए। डीएम ने सम्बन्धित राजस्व कानूनगो राहुल देव को तत्काल प्रभाव से निलम्बित कर दिया है।

पंचायत चुनाव में प्रवासी कर गए खेला

विशेष संवाददाता

देहरादून। राज्य में छोटी सरकार का चुनाव संपन्न हो गया है। चुनाव आयोग और सरकार ने इन चुनावों को लेकर जो खेल तमाशा किया वह राज्य के लोग देख चुके हैं। लेकिन खेल अभी खत्म नहीं हुआ है। पहाड़ के गांव में रहने वाले लोग अब यह सोचकर परेशान है कि वह जिसे प्रधान और पंचायत सदस्य चुनना चाहते थे न तो उनके प्रत्याशी के जीतने की संभावना है न उन प्रत्याशियों के जो लंबे समय से चुनावी तैयारी में जुटे थे क्योंकि जो प्रवासी वोट डालने आए थे वह खेला करके चले गए हैं।

असल में प्रवासी गांव वासियों का अपने गांव आना और वोट डालना देखने में बहुत सुखद लगता है क्योंकि पलायन के कारण गांव उजड़ रहे हैं लेकिन इस चुनाव में दिल्ली, गाजियाबाद, नोएडा और चंडीगढ़ से कार और बसों में भरकर प्रवासी वोट डालने तो आए लेकिन उनके वोट से बहुत सारे प्रत्याशियों के चुनावी समीकरण गड़बड़ा दिए। उदाहरण के तौर पर पौड़ी के एक गांव में मतदाताओं की संख्या महज 30 है लेकिन प्रवासियों

❑कई प्रत्याशियों की जीत सुनिश्चित कर गए प्रवासी

❑सैकड़ो सीटों पर पुनः मतदान संभव, कोर्ट करेगा फैसला

के मत डालने से यहां वोट पड़े हैं 150 यानी 5 गुना अधिक। ऐसे में स्थानीय प्रत्याशी की जीत तो मुश्किल है भले ही उसे गांव के सभी लोगों ने वोट दिया हो जो प्रत्याशी अपने समर्थन में वोट करने के लिए प्रवासियों को गांव तक लाया लाजमी है जीत तो अब उसी की होगी। यह एक उदाहरण भर है बहुत सारी जगह यह खेला हुआ है।

एक और समस्या अभी वह भी बरकरार है जो दो-दो मतदाता सूचियों में नाम से जुड़ी है। सैकड़ो की संख्या में ऐसे प्रत्याशी चुनाव लड़ चुके हैं जिनके नाम शहरी निकाय और गांव के मतदाता सूची में शामिल है ऐसे प्रत्याशी चुनाव जीतने के बाद भी चुनाव हार सकते हैं और उनकी सीट पर पुनः मतदान की स्थिति पैदा होगी ही। एक प्रत्याशी तो ऐसा भी है जो निकाय चुनाव में पार्टी के सिंबल पर चुनाव लड़ चुके हैं और पंचायत का चुनाव भी लड़ रहे हैं। दो मतदाता सूचियों में नाम दर्ज कराना भले ही अपराध की श्रेणी में आता हो और इसमें एक साल की सजा का भी प्रावधान हो लेकिन इसकी उन्हें कोई परवाह नहीं है। चुनावी नतीजों के बाद उनका क्या होगा यह समय ही बताएगा।

दून वैली मेल

संपादकीय

हादसा धार्मिक उन्माद का नतीजा

हिंदुत्व की हार्डकोर राजनीति देश और समाज को किस ओर ले जा रही है इस बात से भाजपा और उसके नेताओं को कोई सरोकार नहीं है। सत्ता में बने रहने और अपनी निजी और व्यक्तिगत राजनीति को चमकाने में जुटे भाजपा नेता किसी की कोई बात मानना तो दूर, बात सुनने तक को तैयार नहीं है। धार्मिक उन्माद की जो लहर बीते एक दशक में पूरे देश और प्रदेश में तेजी से आगे बढ़ रही है उसके परिणाम किसी न किसी रूप में समाज को भोगने पड़ेंगे इसलिए आम जनता को अपने आसपास घटित होने वाली तमाम घटनाओं और दुर्घटनाओं को लेकर सजग रहने की जरूरत है। धर्मनगरी हरिद्वार में मनसा देवी मंदिर में हुई भगदड़ में आठ लोगों की जाने चली गई। इस दुर्घटना में जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी राजराजेश्वरान्द महाराज ने कहा है कि तीर्थ स्थलों को पर्यटन नगरी न बनाया जाए। आप और हम बीते कुछ समय से उत्तराखंड में धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने की जो कवायत देख रहे हैं उससे भली प्रकार से अवगत है। बात चाहे चारधाम ऑल वेदर रूट की हो या फिर मंदिर माला प्रोजेक्ट की जिसके तहत उत्तराखंड के मंदिरों को जोड़ने की बात हो रही है। तीर्थ स्थलों पर भीड़ का इतना दबाव बढ़ चुका है कि हर एक तीर्थ स्थल एक मायावी नगरी में बदलता दिख रहा है। तीर्थ स्थल के पर्यटन स्थलों में तब्दील होने के कारण आस्था भक्ति और श्रद्धा का ह्रास हो रहा है और यह तीर्थ स्थल या तो मौज-मस्ती का केंद्र बनते जा रहे हैं या फिर धार्मिक उद्वेग का स्थल। यह अति स्वाभाविक है कि जहां लाखों और करोड़ की भीड़ जमा होगी वहां धर्म व ध र्मिक आस्था के लिए क्या कोई स्थान शेष बचेगा। यह भीड़ सिर्फ धक्का मुक्की व छेड़छाड़ के अलावा और क्या कर सकती है एक अन्य सवाल यह है कि उत्तराखंड के तमाम मठ और मंदिरों के आने-जाने के रास्ते कितने सरल और सुगम है? बात सिर्फ मनसा देवी मंदिर के सैकड़ो साल पुराने संकरे रास्ते की नहीं है जहां हुई भगदड़ के बाद अब सरकार द्वारा सभी मंदिरों के रास्ते से अतिक्रमण हटाने और उनके चौड़ीकरण के निर्देश दिए गए हैं। सरकार द्वारा की गई इस घोषणा का कितना असर होगा यह तो भविष्य ही बताएगा लेकिन अपने डेमोग्राफिक चेंज को रोकने के फैसले से लेकर सभी मंदिरों के लिए समितियां बनाने के आदेशों तक मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह अपने हिंदुत्व के एजेंडे को आगे बढ़ाने की दिशा में एक कदम और आगे बढ़ चुके थे। वह चाहे धर्मांतरण के खिलाफ और सख्त कानून बनाने की बात कर रहे हो या फिर अवैध मदरसों और मजारों की ध्वस्तीकरण की कार्रवाई को आगे बढ़ाते हुए राज्य के डेमोग्राफी में चेंज न आने देने का दावा कर रहे हो, उनके इन सभी प्रयासों से उन्हें एक पक्के हिंदुत्ववादी नेता के रूप में बुलंदियों के शिखर तक लाकर खड़ा कर दिया है। उत्तराखंड में उनके द्वारा जो नए-नए प्रयोग किए गए हैं उससे राज्य के आर्थिक और सामाजिक हालात कितने सुदृढ़ होंगे यह तो समय ही बताएगा लेकिन उनका अपना राजनीतिक ग्राफ जरूर नई ऊंचाइयों की ओर अग्रसर है। धार्मिक उन्माद की राजनीति आम आदमी के लिए न कभी कल्याणकारी रही है न रहेगी इसमें किसी को कोई संदेह नहीं हो सकता है।

जानलेवा है हेपेटाइटिस की बीमारीः डॉ. सुजाता संजय

वर्ल्ड हेपेटाईटिस डे के अवसर पर सोसायटी फॉर हैल्थ एजुकेशन एंड वूमैन इमपावरमेन्ट ऐवेरनेस द्वारा संजय ऑर्थोपीडिक, स्पाइन एवं मैटरनिटी सेन्टर में गर्भावस्था के दौरान हेपेटाइटिस रोग के बारे में लोगों को जागरूक किया गया। इस कार्यक्रम की मुख्य वक्ता 100 अचीवर्स ऑफ इंडिया से सम्मानित डॉ0 सुजाता संजय स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ, ने महत्वपूर्ण जानकारी दी। हेपेटाइटिस जानलेवा बीमारी है। जिसमें हेपटाइटिस बी सबसे अधिक प्रभावित करने वाली बीमारी है।

विश्व भर में लगभग 500 मिलियन व्यक्ति हेपेटाइटिस 'बी' अथवा हेपेटाइटिस 'सी'(प्रत्येक 12 व्यक्ति में 1) नामक वायरस से प्रभावित हैं एवं वर्ष भर में लगभग 1 मिलियन व्यक्ति इसके कारण मौत का शिकार हो रहे है। ज्यादातर व्यक्तियों को इस प्रकार के पुराने वायरस से प्रभावित होने का पता ही नही चल पाता। हर साल भारत में लगभग ढ़ाई लाख लोग इस बीमारी से मौत का शिकार बनते हैं। 70 से 80 फीसदी लोगों में हेपेटाइटिस के लक्षण नहीं दिखाई देते, इसलिए इसे साइलेंट किलर भी कहा जाता है। लीवर या जिगर शरीर के सबसे बड़े आंतरिक अंगों में से एक है और यह शरीर को विषाक्त पदार्थो से छुटकारा दिलाने सहित 500 से अधिक तरह के कार्य करता है। आदर्श रूप से, लीवर को खुद को सवत साफ करना चाहिए। हालांकि, ज्यादातर लोगों में, लीवर बेहतर तरीके से कार्य नहीं करता है क्योंकि यह पर्यावरण और आहार दोनों तरह के विषाक्त पदार्थो से बुरी तरह से घिरा हुआ है। उन्होनें बताया कि लीवर में वायरल संक्रमण से होने वाली सूजन को हेपेटाइटिस कहते है। यह लीवर कैंसर का सबसे बड़ा कारण है।

उन्होंने बताया कि हेपेटाइटिस को पांच श्रेणीयों (ए.बी.सी.डी व ई) में बांटा गया है जिसमें से ए और ई प्रदूषित खाने व पीने से होती है जबकि बी, सी और डी संक्रमित ब्लड व सुई से होती है। उन्होंने बताया है कि सबसे ज्यादा मरीज बी श्रेणी के आते है, उन्होंने कहा कि बीमारी का सबसे खतरनाक स्टेज सी श्रेणी है। गर्भावस्था के दौरान महिलाओं को सी श्रेणी के हेपेटाइटिस ज्यादा होने की संभावना रहती है। खराब जीवनशैली, खाने की अस्वास्थ्यकर आदतें और भोजन में प्रयोग किये जाने वाले खतरनाक कीटनाशक और भारी धातुओं की उपस्थिति के कारण हमारे लीवर पर अधिक जोर पड़ता है।

डॉ सुजाता संजय ने बताया कि पीलिया खुद में बीमारी नहीं है, बल्कि अन्य किसी रोग की ओर इशारा है। गर्भावस्था में वैसे भी काफी सतर्कता बरती जाती है। फिर भी किसी तरह के रोग या उसके लक्षणों को कदापि हल्के में नहीं लेना चाहिए। आगे चलकर पीलिया ही हेपेटाइटिस का रूप ले लेता है। जिसके कई रूप हैं इसके प्रति जागरूकता से ही बचाव संभव है।

डॉ. सुजाता एक गायनाकोलॉजिस्ट होने के नाते यह महसूस करती हैं कि महिलाओं में इस बीमारी के प्रति जागरूकता की बेहद आवश्यकता है। क्योंकि महिलाएं सिर्फ एक शरीर नहीं, बल्कि एक पूरा परिवार चलाने वाली शक्ति होती हैं। अगर वह बीमार पड़ती हैं, तो पूरा परिवार प्रभावित होता है। गर्भवती महिलाओं में हेपेटाइटिस विशेष रूप से चिंताजनक हो सकता है। यह संक्रमण माँ से बच्चे में जन्म के समय फैल सकता है, जिससे नवजात की जान को खतरा हो सकता है। इसके अलावा, हेपेटाइटिस ठ और ब् कई बार बिना लक्षणों के होते हैं, और वर्षों तक शरीर में सक्रिय रहते हैं, इसलिए नियमित जांच बहुत जरूरी है।

उन्होंने कहा कि आजकर शरीर पर टैटू बनवाने का चलन खूब है। एक ही निडिल से कई लोगों को टैटू बनाने से हेपेटाइटिस सी हो सकता है।यह संक्रमित मां से गर्भ में बच्चे को हो सकता है। मां केवल कैरियर भी हो सकती है। बच्चे में इसका संक्रमण रोकने के लिए जन्म के उपरांत 12 घंटे के अंदर हेपेटाटिस-बी वैक्सीन की पहली खुराक एवं इम्मूनोग्लोबुलिंन के इंजेक्शन दिये जाते हैं। शिशु को स्तनपान कराने में परहेज नहीं करना चाहिए। पीलिया होने पर आराम करें एवं डॉक्टर की निगरानी में रहें। खून की सामान्य जांच से हेपेटाइटिस बी और सी का पता लगाया जा सकता है, क्योंकि मरीज में शुरूआती लक्षण न दिखने के कारण इस बीमारी का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता है। इस संक्रमण के हाईरिस्क ग्रुप में संक्रमित मां से बच्चे, चिकित्सा पेशे से जुड़े लोग, ऐसे मरीज जिन्हें रक्त चढ़ाया गया हो, सिरिंज से ड्रग लेने वाले आते हैं। इसलिए संक्रमण का पता लगाने के स्कीनिंग सबसे जरूरी है। हेपेटाइटिस बी वायरस से बचाव का एक मात्र उपाय टीकाकरण है।

3702 व्यक्तियों में से पात्र व्यक्तियों का होना है चिन्हीकरणः मोर्चा

संवाददाता

देहरादून। जन संघर्ष मोर्चा अध्यक्ष रघुनाथ सिंह नेगी ने कहा कि 3702 व्यक्तियों में से कई ऐसे हैं, जो पूरी पात्रता पूर्ण करते हैं, लेकिन अधिकारियों द्वारा उसमें भी कई आपत्तियां लगाई गई हैं, जिसका निस्तारण आज तक नहीं किया गया।

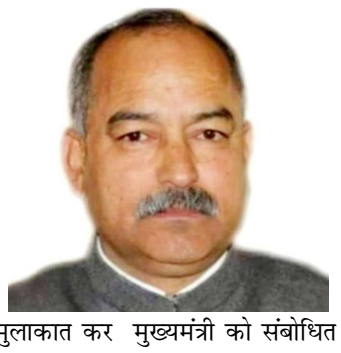

आज यहां जन संघर्ष मोर्चा अध्यक्ष रघुनाथ सिंह नेगी ने मुख्य सचिव आनंद वर्धन से मुलाकात कर मुख्यमंत्री को संबोधित ज्ञापन सौंपा। ज्ञापन में उन्होंने कहा कि लगभग डेढ़- दो वर्ष से 3702 राज्य आंदोलनकारियों के चिन्हीकरण संबंधी लंबित पत्रावली पर कार्यवाही का आग्रह किया। आनंद वर्धन ने कार्यवाही का भरोसा दिलाया। नेगी ने कहा कि उक्त 3702 व्यक्तियों में से कई ऐसे हैं, जो पूरी पात्रता पूर्ण करते हैं, लेकिन अधिकारियों द्वारा उसमें भी कई आपत्तियां लगाई गई हैं, जिसका निस्तारण आज तक नहीं किया गया। अगर अधिकारियों को इन व्यक्तियों के दस्तावेजों पर कोई संदेह है तो संबंधित विभाग से जानकारी जुटाई जा सकती थी, लेकिन गैर जिम्मेदार व निकम्मे अधिकारियों द्वारा कोई कार्रवाई नहीं की गई। आलम यह है कि अधिकारी सिर्फ और सिर्फ निजी हित साधने में लगे हैं, उनका इससे कोई लेना-देना नहीं है। हैरान करने वाली बात यह है कि अधिकारियों द्वारा इन वंचित आंदोलनकारियों पर लगभग 20 करोड रुपए प्रतिवर्ष खर्च का रोना रोया गया है तथा भविष्य में आंदोलनकारियों की संख्या बढ़ने की भी संभावना जताई है, बहुत कष्टकारी है। नेगी ने इन अधिकारियों को चेताया कि जिन आंदोलनकारियों की बदौलत आज बड़े-बड़े पद धारण किए हुए हो, अगर राज्य ना बनता तो तुम्हारी हैसियत क्या होती इसका अंदाजा खुद लगा सकते हो।

अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा ने पौधों से किया भोलेनाथ का श्रृंगार

संवाददाता

देहरादून। अखिल भारत वर्षीय ब्रहामण महासभा ने हरेला पर्व पर पौधों से भोलेनाथ का श्रृंगार किया।

आज यहां अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा उत्तराखंड द्वारा हरेला पर्व एवं हरियाली तीज के शुभ अवसर पर पृथ्वी नाथ मंदिर सहारनपुर चौक में बाबा भोले जी महाराज का पौधों द्वारा श्रृंगार किया गया और उसके उपरांत प्रातः भक्तों को अमृत वर्षा पौधे वितरित किए गए।

मनमोहन शर्मा ने प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से जानकारी दी कि अखिल भारत वर्षीय ब्राह्मण महासभा उत्तराखंड द्वारा सोमवार को मंदिर में पौधों को संग्रहित किया गया और सांय कालीन संध्या में पौधों से बाबा भोले जी का श्रृंगार किया गया और नाग पंचमी के दिवस पर प्रत्येक जनमानस और भक्तों को पौधे वितरित किए गए।

दिनेश पुरी ने संबोधित करते हुए कहा कि ब्राह्मण महासभा ने वृक्षों को वितरित एवं रोपण कर जनमानस को एक नया संदेश दिया है कि अगर भक्त और जनमानस बाबा भोले का प्रसाद समझकर उनको अपने घर में विराजमान

करते हैं तो उनसे उनके घर में सुख शांति और वैभव मिलता है और हमारे जीवन में पौधों से जड़ी बूटियां के रूप में जीवन को स्वस्थ रखने में पौधा हमारे लाभदायक है।

इसी क्रम में पंडित मनमोहन शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि सर्वप्रथम भक्तों और जनमानस को नाग पंचमी की शुभकामनाएं और आज हमें बाबा भोले नाथ का श्रृंगार करने का अवसर प्राप्त हुआ और भक्तों को और जनमानस को भगवान का पौधों के रूप में प्रसाद प्राप्त हो रहा है। यह जनमानस और भक्तों के लिए बहुत लाभदायक है। अमृत वर्षा में सभी को पौधे वितरित किए गए और पौधारोपण का कार्य किया गया और सभी भक्त और जनमानस को नाग पंचमी बधाई और शुभकामनाएं दी।

इस अवसर पर पंडित मनमोहन शर्मा अध्यक्ष, दिनेश पुरी, उमाशंकर शर्मा, लालचंद शर्मा, महेश कोठारी, पंडित संदीप धूलिया, पंडित बृजभूषण शर्मा, नवीन गुप्ता, संजय गर्ग, विक्की गोयल, राजकुमार, पंकज शर्मा, शमी मुख्य रूप से रहे।

चटोरे लोगों के लिए बड़ी चेतावनी...!

आशा शर्मा

केंद्र सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय ने एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए समोसा, जलेबी, वडा पाव इत्यादि खाद्य पदार्थों पर चेतावनी देने के निर्देश दिए हैं कि इसमें कितनी तेल और शुगर वापरी गई है। भारत एक युवा देश है लेकिन हमारे युवा जंक फूड और अस्वास्थ्यकारक खाद्य पदार्थ खाने के आदी हो गए हैं। अनेक वजहों से उन्हें घर का सात्विक भोजन पसंद नहीं आता। जाहिर है यह समस्या बीमारी का रूप ले चुकी है। क्या कभी सोचा है कि एक समोसे में 362 कैलोरी और 28 ग्राम फैट, एक जलेबी में शुगर का खतरनाक स्तर, और एक वड़ा पाव में लगभग 263 कैलोरी आपके शरीर के साथ क्या कर रहे हैं ? यही नहीं, हमारे बच्चों के टिफिन बॉक्स में रोज़ाना जो नूडल्स, पास्ता, बर्गर और सैंडविच जाते हैं, उनमें छिपी वसा और चीनी धीरे-धीरे हमारे समाज को बीमार और कमजोर बना रही है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट बताती है कि भारत में मोटापे के मामले पिछले दस वर्षों में दोगुने हो चुके हैं। 5 से 19 साल के बच्चों में 14 फीसदी से अधिक अब मोटापे या ओवरवेट श्रेणी में आते हैं। ये आंकड़े सिर्फ संख्या नहीं, आने वाले समय में होने वाले मधुमेह, हृदय रोग और कैंसर के खतरे की घंटी हैं। इस पृष्ठभूमि में भारत सरकार का स्वास्थ्य मंत्रालय जो कदम उठा रहा है, वह स्वागत योग्य है। समोसा, जलेबी, वड़ा पाव जैसे लोकप्रिय स्नैक्स पर सिगरेट जैसी चेतावनी लगाने की योजना एक साहसिक पहल है। योजना के तहत केंद्रीय संस्थानों और सार्वजनिक स्थानों पर ऑयल और शुगर बोर्ड लगाए जाएंगे, जिन पर स्पष्ट रूप से लिखा होगा कि इस भोजन में कितनी कैलोरी, कितनी वसा और कितनी चीनी है। यह पहल नागपुर के एम्स सहित कुछ संस्थानों से शुरू हो रही है। लेकिन सवाल यह है-क्या सिर्फ बोर्ड लगाने से आदतें बदलेंगी? भारत में साक्षरता और भाषाई विविधता को देखते हुए विशेषज्ञ मानते हैं कि हेल्थ स्टार रेटिंग नहीं, बल्कि सीधे चेतावनी लेबल जरूरी हैं। चिली, मेक्सिको जैसे देशों में यह मॉडल सफल रहा है, जहां चीनी और फैट की खपत में उल्लेखनीय कमी आई। भारत को भी यही करना होगा। मगर केवल लेबल और बोर्ड पर्याप्त नहीं। हमें जनजागरण की लहर उठानी होगी। क्योंकि सबसे ज्यादा खतरे में हैं हमारे बच्चे ! जो देश का भविष्य हैं। आज उनका बचपन जंक फूड में डूबा है। अगर यह नहीं बदला तो उनकी कार्यक्षमता, उनकी सेहत, और आगे चलकर देश की आर्थिक प्रगति पर असर पड़ेगा। यह सिर्फ स्वास्थ्य का मुद्दा नहीं, राष्ट्रीय सुरक्षा का मुद्दा है। इसलिए सरकार के साथ-साथ सामाजिक संस्थाएं, अभिभावक, स्कूल और मीडिया सबको मोर्चा संभालना होगा। टीवी, रेडियो, सोशल मीडिया पर स्वास्थ्य अभियानों को आक्रामक तरीके से चलाना होगा। बच्चों को यह सिखाना होगा कि स्वाद से बढक़र सेहत है। आज हम अगर चुप रहे तो कल हमें मोटापे, बीमारियों और चिकित्सा खर्च के पहाड़ के नीचे दबना होगा। सवाल सिर्फ समोसे, जलेबी या बर्गर का नहीं है, सवाल है आने वाली पीढ़ी के स्वस्थ भारत का। अब समय आ गया है कि स्वाद के नाम पर जहर पर कड़ी चेतावनी लगे और लोग जागरूक हों।

अमीर और अमीर

साहसिक स्वीकारोक्ति, सच्चाई का सामना या सरकार को आईना दिखाना कहें, या कुछ और लेकर सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने जो कहा उसे सरकार के रुख के विपरीत तो कहा ही जा सकता है।

उन्होंने जो कहा उसका साफ-साफ अभिप्राय= यही है कि देश में गरीबों की संख्या बढ़ रही है, अमीर और अमीर होते जा रहे हैं। यह बयान ऐसे समय आया है जब संयुक्त राष्ट्र के हवाले से कुछ समय पहले कहा गया था कि देश में 33 करोड़ लोग गरीबी की रेखा से ऊपर उठ चुके हैं। संघ और अपने गढ़ नागपुर में एक कार्यक्रम में गडकरी ने कहा कि धन का विकेंद्रीकरण जरूरी है। उन्होंने कृषि, विनिर्माण, कराधान और बुनियादी ढांचे के विकास में सार्वजनिक-निजी भागीदारी (पीपीपी) सहित कई मुद्दों पर बात की।

उनका इशारा अमीरों के धन पर शिंकजा ढीला करने की तरफ था। उनके अनुसार अर्थव्यवस्था को इस तरह से विकसित होना चाहिए कि रोजगार पैदा हों और ग्रामीण क्षेत्रों का उत्थान हो। उदार आर्थिक नीतियां अपनाने के लिए उन्होंने पूर्व प्रधानमंत्रियों पीवी नरसिंह राव और मनमोहनसिह की प्रशंसा की। उनके अनुसार ऐसे आर्थिक विकल्प पर विचार चल रहा है, जो रोजगार पैदा करेगा और अर्थव्यवस्था की वृद्धि को बढ़ावा देगा।

केंद्रीय मंत्री सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में क्षेत्रीय योगदान में असंतुलन से चिंतित दिखाई दिए। विनिर्माण क्षेत्र 22-24 फीसद, सेवा क्षेत्र 52-54 फीसद योगदान देता है, जबकि कृषि, ग्रामीण आबादी के 65-7० फीसद हिस्से को शामिल करने के बावजूद केवल 12 फीसद योगदान देती है। कृषि क्षेत्र का योगदान अर्थव्यवस्था में और अधिक होना चाहिए। चार्टर्ड अकाउंटेंट्स (सीए) की पीठ ठोकते हुए केंद्रीय मंत्री ने उनमें अन्य क्षेत्रों में भी दखल बढ़ाने को कहा।

वे अर्थव्यवस्था के वृद्धि इंजन हो सकते हैं। आयकर रिटर्न दाखिल करने और जीएसटी जमा करने तक ही सीमित न रहें। गडकरी ने अपने मंत्रालय के काम का हवाला देते हुए कहा कि सड़क विकास के लिए धन की कमी नहीं है। मैं कहता हूं कि मेरे पास धन की कमी नहीं है, बल्कि मेरे पास काम की कमी है। उन्हें इस बात पर भी विचार करना चाहिए कि जनता से पैसा वसूल कर खजाना भरना ही योग्यता नहीं है। गरीबों की बढ़ती संख्या और चंद लोगों के अमीर होते जाने की स्थिति को बदलने की आवश्यकता है।

नारी सशक्तिकरण की नयी मिसाल, हर गांव की नारी, अब प्रेरणा की अधिकारी

डॉ. दानेश्वरी संभाकर

छत्तीसगढ़ की पावन धरती पर, जहां मातृत्व की ममता और नारीत्व की गरिमा सदियों से पूजनीय रही है, वहीं आज एक नई सामाजिक क्रांति आकार ले रही है, महतारी वंदन योजना के रूप में। यह केवल एक कल्याणकारी योजना नहीं, बल्कि नारी गरिमा, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता का महोत्सव बन गई है, जिसने राज्य की लाखों महिलाओं को गरिमापूर्ण जीवन जीने की दिशा दी है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 1० मार्च 2०24 को महतारी वंदन योजना का शुभारंभ करते हुए स्पष्ट किया कि यह केवल आर्थिक सहायता नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की हर माँ, बहन और बेटी को मुख्यधारा में लाने का संकल्प है। उन्होंने इसे नारी गरिमा का उत्सव कहा। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में और महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े की सक्रिय भागीदारी से यह योजना बहुत ही कम समय में जन-आंदोलन में परिवर्तित हो गई। शासन की प्रतिबद्धता, संवेदनशीलता और समर्पण ने इसे घर-घर तक पहुंचा दिया।

आंकड़ों से आगे बढ़ती कहानी=

मार्च 2०24 से जुलाई 2०25 तक कुल 17 किश्तों में लगभग 7० लाख महिलाओं को 11 हजार ०8 करोड़ रूपए की राशि सीधे उनके बैंक खातों में ट्रांसफर की गई। यह केवल आर्थिक मदद नहीं, बल्कि उन सपनों की पूंजी है जिन्हें अब तक परिस्थितियों ने दबा दिया था। योजना से महिलाओं को जो आत्मबल मिला, उसने उनके जीवन को नए आयाम दिए।

आर्थिक स्वावलंबन का रास्ता= आज छत्तीसगढ़ की महिलाएं अपने पैरों पर खड़ी हैं। किसी ने छोटा व्यवसाय शुरू किया, तो किसी ने बच्चों की शिक्षा और घरेलू जरूरतों को सहजता से पूरा किया। यह आर्थिक संबल महिलाओं को आत्मविश्वास, सामाजिक पहचान और सम्मान दे रहा है। वे अब केवल पारंपरिक भूमिकाओं में सीमित नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक रीढ़ और समाज की निर्णायक शक्ति बनती जा रही हैं।

हर गांव की नारी, अब प्रेरणा की अधिकारी= योजना की असली तस्वीर उन कहानियों में है, जो अब गांव-गांव में प्रेरणा का स्रोत बन रही हैं श्रीमती कंचन जो ग्राम गीधा, मुंगेली की निवासी हैं। उन्होंने महतारी वंदन योजना से मिलने वाले पैसों से गुपचुप ठेला व्यवसाय को बढ़ाया और अब घर की ज़िम्मेदारियाँ आसानी से निभा रही हैं।

कुरूद ग्राम की निवासी श्रीमती श्यामा बाई जो कंडरा जनजाति से आती हैं और बांस शिल्प के पारंपरिक व्यवसाय से अब आजीविका चलाती हैं। योजना की सहायता अपने व्यवसाय को बढ़ाकर 8००० रुपए तक मासिक आमदनी अर्जित कर रही हैं।

मोहला-मानपुर की ग्राम दिघवाड़ी निवासी श्रीमती गीता यादव कहती हैं कि सालाना मिलने वाले 12 हजार रूपए हमारी कई जरूरतों को पूरा करने में मददगार होंगे। इससे रोजमर्रा के खर्च, बच्चों के दवाइयों और पढ़ाई का समान खरीदने में राहत मिलेगी।

ग्राम हथरा निवासी श्रीमती कान्ति बाई ने कहा कि महतारी वंदन योजना से मिली राशि से वह अपनी और घर की जरूरतें पूरी कर सकेंगी। अब उन्हें छोटी-मोटी चीजों के लिए बार-बार पति से कहने की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने इस योजना को महिलाओं को केवल सहायता नहीं, बल्कि समाज में भागीदारी का अधिकार देने वाला प्रयास बताया है। महिला एवं बाल विकास मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े की संवेदनशील सोच और जमीनी सक्रियता ने इसे नीतिगत घोषणा से निकालकर समाज की धड़कन बना दिया है। एक नई सुबह की दस्तक= आज जब हम छत्तीसगढ़ की गलियों और घरों में झांकते हैं, तो वहां हमें आंकड़ों से परे एक विश्वास, आत्मबल और आशा की कहानी दिखाई देती है। महतारी वंदन योजना अब केवल सरकार की उपलब्धि नहीं, बल्कि समाज की मुस्कान बन गई है। छत्तीसगढ़ की हर माँ-बेटी की आवाज़ में अब यह आत्मविश्वास झलकता है। - अब हर महतारी सशक्त है, अब हर बेटी समर्थ है।''

प्रेगनेंसी के दौरान कमर दर्द अब नहीं करेगा परेशान

प्रेगनेंसी के दौरान अधिकतर महिलाओं को कमर दर्द की समस्या का सामना करना पड़ता है। 9 माह तक कमर पर पड़ने वाला अत्याधिक भार कई तरह की समस्याओं को जन्म देता है। लेकिन अगर आप गर्भावस्था में कमर दर्द की समस्या से छुटकारा पाना चाहती हैं तो इन टिप्स को ट्राई जरूर करें। प्रेगनेंसी के दौरान गलत पोश्चर कमर दर्द का सबसे बड़ा कारण है। कोशिश करें कि बैठते वक्त आपकी कमर एकदम सीधी हो और इसपर किसी प्रकार का कोई दबाव न पड़ रहा हो। कोशिश करें कि आपके स्लीपर्स फ्लैट, सिंपल और कर्म्फटेबल हों। हाई हील्स के शूज पहनने से बचें, ये आपकी कमर पर अधिक भार डालते हैं।

आपके बैड के गद्दे जितने अच्छे होंगे आपको नींद भी उतनी ही अच्छी आएगी। कमर पर कम दबाव पडें, इसके लिए अपने घुटनों के नीचे तकिया लगाकर सोएं। अपने घुटनों के बीच तकिया लगाकर सोने से भी आप कमर दर्द से बच सकते हैं।

नौ महीनों तक एक्स्ट्रावेट लेकर चलना आपकी कमर पर पहले से ही काफी भार डाल चुका होता है। ऐसे में और अधिक वेट लेकर चलने से बचें।

अगर आपको जमीन से कुछ उठाना है तो अपने घुटनों को मोड़ें और कमर को सीधा रखें। कुछ उठाने के लिए अपनी कमर की बजाए पैरों पर प्रेशर डालें। कोशिश करें कि आपके इस्तेमाल करने वाला सभी जरूरी सामान आपकी पहुंच के अंदर हो।

प्रेगनेंसी में सबसे अधिक भार आपकी कमर पर पड़ता है। ऐसे में कमर दर्द की समस्या से बचने के लिए लम्बे समय तक बैठने से बचें। अगर आपका काम ज्यादा देर तक बैठे रहने का है तो स्टूल पर पैर रखकर बैठें। अगर आप वर्किंग हैं और आपको पूरे दिन बैठकर काम करना होता है तो कमर के पीछे तकिया जरूर लगाएं। इससे आपकी बैक को सपोर्ट मिलेगा और कमर में दर्द नहीं होगा।सब जानते हैं कि इस दौरान भूख अधिक लगती है लेकिन अधिक खाने से आप ओवरवेट भी हो सकती हैं। प्रेगनेंसी के बाद मोटापे से बचने के लिए हेल्दी डाइट लें।

हिन्दी करोड़ों भारतीयों के दिलों की आवाज

मोनिका चौहान

हाल में कर्नाटक में बेंगलुरु मेट्रो के साइन बोडरे पर हिन्दी के इस्तेमाल को लेकर छिड़ा विवाद अब स्थानीय मुद्दा नहीं रह गया है। धीरे-धीरे पूरे दक्षिण भारत में फैल चुका है।

सोशल मीडिया से लेकर टेलीविजन डिबेट्स तक में गूंज रहा है। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (एमएनएस) के कार्यकर्ता भी सक्रिय हो गए हैं। हाल में उन्होंने मुंबई के मीरा रोड पर मोर्चा निकाला जहां वे हिन्दी में लिखे साइन बोर्ड हटाने की मांग कर रहे हैं।

एमएनएस कार्यकर्ता जगह-जगह दुकानों और प्रतिष्ठानों पर जाकर मराठी में बोर्ड लगाने की अपील कर रहे हैं। हिन्दी में लिखे साइन बोडरे को हटाने की चेतावनी दे रहे हैं। उनका यह भी कहना है कि मुंबई में रहने वालों को मराठी आनी ही चाहिए। इसे %हिन्दी थोपने' के खिलाफ सांस्कृतिक लड़ाई के रूप में प्रचारित किया जा रहा है। सोशल मीडिया पर हिंदी थोपना बंद करो जैसे हैशटैग ट्रेंड कर रहे हैं, और राजनीतिक दल इसे भाषाई अस्मिता का मुद्दा बना कर भुना रहे हैं। इस विवाद ने दक्षिण बनाम हिन्दी की बहस को हवा दे दी है। कन्नड़ संगठनों और कुछ क्षेत्रीय नेताओं ने इसे %हिन्दी थोपने' का प्रयास बताया हैं, वहीं सोशल मीडिया पर भी हिन्दी के खिलाफ तीखे स्वर उठे हैं।

यह कोई पहली बार नहीं हुआ। समय-समय पर दक्षिण भारत से हिन्दी विरोध के स्वर उठते रहे हैं, जो अक्सर क्षेत्रीय राजनीतिक दलों के लिए वोट बैंक की राजनीति का साधन बन जाते हैं। ताजा विवाद याद दिलाता है, जब कन्नड़ अभिनेता किच्चा सुदीप ने 2022 में कहा था कि हिन्दी अब राष्ट्र भाषा नहीं रही। इस बयान पर बॉलीवुड अभिनेता अजय देवगन ने तीखी प्रतिक्रिया दी थी। कहा था कि हिन्दी राष्ट्र भाषा थी, है, और रहेगी। देखते ही देखते यह सांस्कृतिक बहस से खिसक कर राजनीतिक मुद्दा बन गया था। कर्नाटक के कई नेताओं ने तब भी हिन्दी पर सवाल उठाए थे। वही सिलसिला अब मेट्रो के साइन बोडरे को लेकर फिर सिर उठा रहा है।

सवाल यह है कि आखिर, हिन्दी पर बार-बार का हमला क्यों? हिन्दी कोई थोपी गई भाषा नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के दौर में लाखों भारतीयों के सपनों की आवाज थी। गांधी, नेहरू, पटेल जैसे नेताओं ने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का माध्यम माना। आज भी हिन्दी उत्तर भारत की ही नहीं, बल्कि पूरे देश की संपर्क भाषा है। 2011 की जनगणना के अनुसार भारत में हिन्दी बोलने वालों की संख्या 53 करोड़ से अधिक है। पिछले 50 सालों में हिन्दी बोलने वालों की आबादी में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। हिन्दी न केवल उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, बिहार, राजस्थान जैसे राज्यों की प्रमुख भाषा है, बल्कि महानगरों में भी प्रवासी भारतीयों के कारण लगातार फैल रही है।

दक्षिण भारतीय भाषाओं की बात करें तो तेलुगू को 6.7 प्रतिशत, तमिल को 5.7 प्रतिशत और कन्नड़ को मात्र 3.6 प्रतिशत लोग मातृ भाषा मानते हैं। फिर भी हिन्दी पर निशाना साधना राजनीतिक दलों के लिए सुविधाजनक मुद्दा बना हुआ है। हिन्दी का विरोध करने वाले अक्सर तर्क देते हैं कि हिन्दी का प्रभुत्व क्षेत्रीय भाषाओं को कमजोर कर देगा। पर क्या सचमुच ऐसा है? तथ्य तो यह कहते हैं कि हिन्दी और अन्य भाषाओं में सहअस्तित्व है। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत की ही फिल्म इंडस्ट्री को लें। कन्नड़ फिल्म केजीएफ-2ने हिन्दी डबिंग के दम पर लगभग 900 करोड़ रुपये की कमाई की। दक्षिण की फिल्मों को पैन-इंडिया हिट बनाने में हिन्दी का योगदान छुपा नहीं है।

यह भी सच है कि भारत की भाषाई विविधता उसकी ताकत है। तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, मराठी, बंगाली जैसी भाषाएं हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। इन्हें बचाना और सहेजना जरूरी है। लेकिन इनकी अस्मिता को हिन्दी के विरोध के बहाने राजनीतिक मंच पर भुनाना खतरनाक प्रवृत्ति है। तमिलनाडु का इतिहास इस राजनीति का सबसे बड़ा उदाहरण है। 1937 में हिन्दी को स्कूलों में अनिवार्य बनाने के प्रयास के खिलाफ शुरू हुआ आंदोलन 1965 तक आते-आते हिंसक हो गया था। राजाजी (सी. राजगोपालाचारी) जैसे नेता इसे उत्तर भारतीय प्रभुत्व के प्रतीक के रूप में पेश किया करते थे। आज वही रणनीति कर्नाटक में भी दोहराई जा रही है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने हाल में न्यायपालिका में हिन्दी के उपयोग की वकालत कर हिन्दी प्रेमियों में उम्मीदें जगाई हैं पर सरकार को भी समझना होगा कि किसी भी भाषा को थोपना एकता को नहीं, बल्कि विभाजन को जन्म देता है। हिन्दी के प्रसार का मार्ग स्वाभाविक स्वीकार्यता से ही निकलेगा, न कि आदेशों या कानूनों से। दक्षिण भारत के कई नेता हिन्दी को आक्रमणकारी' भाषा की तरह पेश करते हैं। लेकिन सच यह है कि हिन्दी करोड़ों भारतीयों के दिलों की आवाज है। न केवल हमारी संस्कृति, बल्कि हमारी पहचान का भी हिस्सा है। हिन्दी पर वार दरअसल, भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय एकता पर चोट है। यह समय है कि क्षेत्रीय राजनीतिक दल इस तथ्य को समझें।

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

गैस चूल्हे के बर्नर को साफ करने के लिए अपनाएं ये तरीके, आसान होगा काम

गैस चूल्हे के बर्नर पर खाना बनाते समय कई बार खाने की चीजें गिर जाती हैं, जिससे बर्नर गंदे हो जाते हैं। ऐसे में बर्नर को साफ करना एक मुश्किल काम हो सकता है। हालांकि, अगर आप सही तरीके से इस काम को करें तो यह आसान हो सकता है। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे तरीके बताते हैं, जिन्हें अपनाकर आप अपने गैस चूल्हे के बर्नर को आसानी से साफ कर सकते हैं।

बेकिंग सोडा और सिरके का घोल बनाएं

बेकिंग सोडा और सिरके का घोल गैस चूल्हे के बर्नर को साफ करने के लिए बहुत कारगर होता है। इसके लिए सबसे पहले एक कटोरी में बराबर मात्रा में बेकिंग सोडा और सिरका मिलाएं, फिर इस घोल को बर्नर पर लगाकर कुछ मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद एक नरम ब्रश या कपड़े से हल्के हाथों से रगड़ें। इससे जिद्दी दाग आसानी से हट जाएंगे और बर्नर चमक उठेगा।

नींबू का रस भी है उपयोगी

नींबू का रस भी गैस चूल्हे के बर्नर को साफ करने में मदद कर सकता है। इसके लिए एक नींबू को आधा काटकर उसके रस को बर्नर पर लगाएं और कुछ देर के लिए छोड़ दें, फिर एक नरम ब्रश या कपड़े से रगड़ें। नींबू के खट्टे गुण दागों को ढीला कर देते हैं, जिससे वे आसानी से हट जाते हैं। इसके अलावा नींबू की खुशबू भी आपके बर्नर को ताजा बना देती है।

गर्म पानी का करें इस्तेमाल

गर्म पानी का इस्तेमाल करके भी गैस चूल्हे के बर्नर को साफ किया जा सकता है। इसके लिए सबसे पहले एक पैन में पानी गर्म करें और उसमें थोड़ा साबुन डालें। जब पानी अच्छी तरह गर्म हो जाए तो उसे बर्नर पर डालें और कुछ मिनट के लिए छोड़ दें ताकि दाग ढीले हो जाएं। इसके बाद एक नरम कपड़े से पोंछ लें। इससे बर्नर साफ हो जाएगा और उसकी चमक भी वापस आ जाएगी।

नियमित सफाई बनाए रखें

गैस चूल्हे के बर्नर को साफ रखने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि आप नियमित रूप से उसकी सफाई करें। हर बार खाना बनाने के बाद तुरंत ही गंदगी को साफ करें ताकि दाग न जमें। इससे आपको ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ेगी और आपका गैस चूल्हा हमेशा नया जैसा दिखेगा। इन सरल तरीकों को अपनाकर आप अपने गैस चूल्हे के बर्नर को आसानी से साफ रख सकते हैं।

शब्द सामर्थ्य -29

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. कतार, क्रम, पांत 2. लज्जत, जायका 4. कारण, वजह 7. सुंदर प्रतीत होना, सुखद होना 8. घोड़े आदि का मल 9. अक्सर, ज्यादातर 10. चक्की में पीसना, मसलना, कुचलना 12. धनुष, फौजी टुकड़ी 13. आभूषण, जेवर 15. लहरों का चक्कर, जलावर्त, भ्रमर 17. बायां, विरुद्ध 18. गाना, नगमा 19. लाचार, विवश 22. नमन, प्रणाम 25. चौकी, थाना 26. इकरार, समझौता, ठेका 27. अधिकार होना, सामर्थ्य होना (मुहा.)।

ऊपर से नीचे

1. एक प्रदेश जिसकी राजधानी चंडीगढ़ है 2. हविर्दान के समय उच्चारित एक शब्द, भष्म 3. दन-दन करते हुए 5. बलशाली, बलवाला 6. परिवर्तित करना, पहले से भिन्न हो जाना 7. चांद, चंद्रमा, रजनीश 11. अप्रिय, अरुचिकर 14. मैं का बहुवचन 15. भंगेड़ी, भंग करने वाला, झाड़ू लगाने तथा मैला साफ करने वाली 16. मातृभूमि, स्वदेश 19. मक्खन, माखन 20. बुढ़ापा, धन, ज्वर 21. टालना, हटाना, बहाना करके हटाना 23. सीमा, हद 24. सौ का पाचंवा हिस्सा 25. घोड़े के पैरों में लगाने का लोहे का टुकड़ा, पौधे आदि का डंठल।

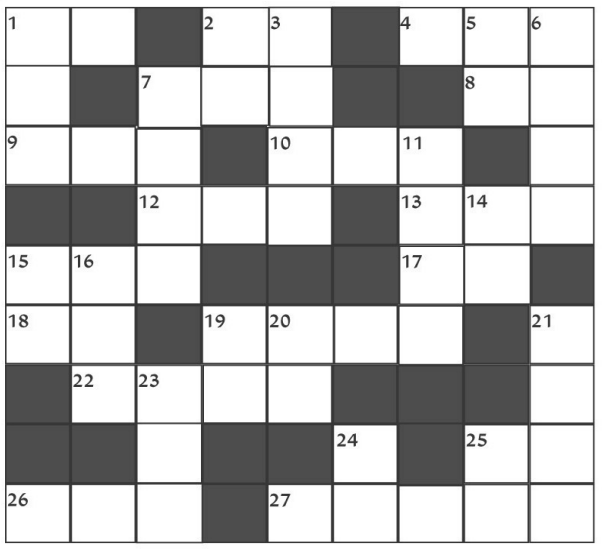

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 28 का हल

वि	ज	य	■	ब	नि	या	■	दे
वा	■	ती	त	र	■	रा	जी	व
ह	मा	म	■	स	प	ना	■	ता
■	न	■	■	■	टा	■	■	■
दा	व	त	■	वि	ना	श	■	अ
य	■	ह	त्या	■	■	ह	र्जा	ना
रा	ह	त	■	न	ज	र	■	व
■	वा	■	■	■	मी	■	ना	श्य
दु	ला	रा	■	जा	न	की	■	क

सिला का नया पोस्टर आया सामने, खून से लथपथ दिखे हर्षवर्धन राणे

अभिनेता हर्षवर्धन राणे ने अपकमिंग फिल्म सिला' का नया मोशन पोस्टर सोशल मीडिया पर जारी किया। पोस्टर में अभिनेता खून से लथपथ हाथ में हथियार लिए दिखे। अभिनेता ने इंस्टाग्राम अकाउंट पर सिला का नया मोशन पोस्टर शेयर किया, इस पोस्टर में अभिनेता बेहद गंभीर और खतरनाक अवतार में नजर आ रहे हैं। पोस्टर में उन्हें खून से लथपथ हालत में एक हथियार पकड़े हुए देखा जा रहा है, उनके ठीक पीछे आग का एक बड़ा गोला दिखाई दे रहा है, जो फिल्म में होने वाले धमाकेदार एक्शन की ओर इशारा करता है। उन्होंने पोस्टर शेयर कर कैप्शन में लिखा, इश्क में सुकून, जंग में जुनून, खुद में तूफान, विराट उसका नाम। सिला फैंस को ये पोस्ट काफी पसंद आ रहा है, यूजर्स उन्हें कमेंट करके हार्ट, फायर जैसे इमोजी भेज रहे हैं। हर्षवर्धन राणे अभिनीत फिल्म सिला' का निर्देशन ओमंग कुमार कर रहे हैं। फिल्म में अभिनेता के साथ मुख्य भूमिका में सादिया खातीब है। दोनों पहली बार स्क्रीन शेयर कर रहे हैं। फिल्म में बिग बॉस 18 के विजेता करण वीर मेहरा भी नजर आएंगे। वह फिल्म में खलनायक के किरदार में दिखेंगे। हर्षवर्धन राणे और करण वीर मेहरा स्क्रीन पर कट्टर दुश्मन के रूप में दिखेंगे। जी स्टूडियोज की एक्शन से भरपूर फिल्म में सारेगामा ने म्यूजिक लेबल दिया है। इस फिल्म को ओमंग कुमार के साथ उमेश के.आर. बंसल, प्रगति देशमुख, हिमांशु तिवारी, अजय सिंह, धनंजय सिंह, अभिषेक अंकुर और कैप्टन राहुल बाली प्रोड्यूस कर रहे हैं। वहीं, राहत शाह काजमी इस फिल्म के सह-निर्माता हैं। अभिनेता के वर्कफ्रंट की बात करें, तो उन्होंने फिल्म एक दीवाने की दीवानियत' की शूटिंग पूरी कर ली है। इस फिल्म में उनके साथ सोनम बाजवा मुख्य भूमिका में नजर आएंगी। फिल्म के मेकर्स ने बताया कि पहले फिल्म का टाइटल सिर्फ दीवानियत था, लेकिन फिल्म की कहानी और उसका नया अंदाज टाइटल से मेल नहीं खा रहा था। जिसके बाद उसका नाम बदलकर एक दीवाने की दीवानियत रख दिया गया।

बॉर्डर 2 से सनी देओल की पहली झलक आई सामने, लिखा- मिशन पूरा हुआ

निर्देशक जे पी दत्ता की ब्लॉकबस्टर फिल्म बॉर्डर का सीक्वल बॉर्डर 2 जल्द ही आने वाला है। आज फिल्म में मुख्य भूमिका निभा रहे सनी देओल ने बॉर्डर 2 से अपना फौजी लुक सोशल मीडिया पर शेयर किया और साथ ही फिल्म को लेकर एक अहम जानकारी भी शेयर की है। इस खुशखबरी को सुनकर सनी के फैंस जरूर खुश हो जाएंगे। सनी देओल ने इंस्टाग्राम हैंडल पर अपनी आगामी बहुप्रतीक्षित फिल्म बॉर्डर 2 को लेकर एक खास पोस्ट शेयर कर अपने फैंस को खुश कर दिया है। सनी ने इंस्टाग्राम पर फिल्म से अपना फौजी लुक शेयर किया और साथ ही कैप्शन में लिखा, मिशन पूरा हुआ। फौजी, विदा लेता हूं! #बॉर्डर2 के लिए मेरी शूटिंग पूरी हुई। जय हिंद! एक्ट्रेस सिमरत कौर ने लिखा, जय हिंद, एक फैन ने लिखा, बहुत खूब..., एक और फैन ने लिखा, जय श्री राम, एक और फैन ने लिखा, सनी देओल सर हमेशा दिल को छू लेने वाले दिग्गज अभिनेता हैं, एक और फैन ने लिखा, शानदार.., एक और फैन ने लिखा, सर आप एक सच्चे हीरो लगते हैं, एक और फैन ने लिखा, इंतजार नहीं कर सकता सर-जय हिंद, एक और फैन ने लिखा, अब रिलीज का इंतजार है। बॉर्डर 2 का निर्देशन अनुराग सिंह ने किया है। बॉर्डर 2 फिल्म में सनी देओल, दिलजीत दोसांझ, अहान शेट्टी, और वरुण धवन जैसे कलाकार नजर आएंगे। मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार फिल्म बॉर्डर 2, 23 जनवरी 2026 को रिलीज हो सकती है। फिल्म में वरुण धवन परमवीर चक्र विजेता मेजर होशियार सिंह दहिया की भूमिका निभाएंगे।

राम चरण की फिल्म पेद्दी में शिव राजकुमार हुए शामिल

बुची बाबू सना के निर्देशन में बन रही बहुप्रतीक्षित एक्शन फिल्म पेद्दी के निर्माताओं ने कन्नड़ सुपरस्टार शिव राजकुमार को जन्मदिन की शुभकामनाएं दी है। इसके साथ ही फिल्म में उनके किरदार के नाम और लुक का खुलासा किया है। आपको बताते चलें कि पेद्दी में मुख्य भूमिका में राम चरण नजर आएंगे।

साउथ सुपरस्टार शिव राजकुमार के 63वां जन्मदिन के खास अवसर पर आगामी फिल्म पेद्दी के निर्माताओं ने अभिनेता को बर्थडे का खास तोहफा देते हुए उनके लुक को रिवील किया है। पेद्दी फिल्म के प्रोडक्शन हाउस वृद्धि सिनेमाज ने अपने एक्स अकाउंट पर अभिनेता के लुक को जारी करते हुए कैप्शन दिया, टीम पेद्दी' शिव राजकुमार को जन्मदिन की बहुत-बहुत शुभकामनाएं देती है। इसके साथ वह फिल्म में गौरनायडू के किरदार में बड़े पर्दे पर धमाकेदार वापसी करेंगे।'

कुछ महीनों पहले निर्माताओं ने पेड्डी फर्स्ट शॉट शीर्षक से एक टीजर भी जारी किया था, जिसमें राम चरण दमदार लुक में दिखे थे। नेटिजंस उन्हें देख काफी रोमांचित हो उठे थे। एक मिनट के टीजर में अभिनेता को धूल भरे मैदान में चलते हुए दिखाया गया था। राम चरण अभिनीत पेद्दी' 27 मार्च 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होगी। फिल्म को कई भाषाओं में रिलीज किया जाएगा। बुची बाबू सना द्वारा निर्देशित पेद्दी' में राम चरण के अलावा जान्हवी कपूर, दिव्येंदु शर्मा, शिव राजकुमार और जगपति बाबू भी प्रमुख भूमिकाओं में नजर आएंगे।

गुरु रंधावा के साथ काम करना मतलब एकदम कातिल तजुर्बा था: रेवती माहुरकर

100 मिलियन से अधिक व्यूज़ पार कर चुकी म्यूज़िक वीडियो क़त्ल के साथ, डेब्यूटांट रेवती माहुरकर इन दिनों फैंस और इंडस्ट्री दोनों से खूब वाहवाही बटोर रही हैं। उनकी परफॉर्मेंस को जहां रॉ इमोशन और ग्रेस के लिए सराहा जा रहा है, वहीं रेवती खुद इस मौके के लिए बेहद शुक्रगुजार हैं कि उन्हें म्यूज़िक सुपरस्टार गुरु रंधावा के साथ स्क्रीन शेयर करने का मौका मिला जिसे वो अपना करियर-डिफाइनिंग मोमेंट मानती हैं। सेट के अनुभव को याद करते हुए रेवती ने कहा, गुरु इतने सपोर्टिव और डाउन-टू-अर्थ हैं कि पहले दिन से ही ऐसा लगा जैसे किसी पुराने दोस्त के साथ शूट कर रही हूं। उनका एनर्जी और ईज़ के साथ परफॉर्म करना इतना इंस्पायरिंग था कि मेरी भी बेस्ट परफॉर्मेंस वहीं निकल गई!

बॉस्को मार्टिस द्वारा डायरेक्ट और वार्नर म्यूज़िक द्वारा रिलीज़ किया गया ये गाना एक फ्यूचरिस्टिक, डार्क डांस नंबर है जिसमें विज़ुअल ड्रामा और इमोशन की पूरी बारात है। रेवती ने इसमें एक मिस्ट्री भरे और बोल्ड कैरेक्टर को जिस अंदाज़ में निभाया है, वो वीडियो को और भी खास बना देता है। थिएटर और डांस की दुनिया से निकलकर ये रेवती की डिजिटल दुनिया में बड़ी छलांग है और इसके लिए वो गुरु रंधावा और पूरी टीम को क्रेडिट देती हैं- इन लोगों ने इस पूरे सफर को इतना स्मूद और क्रिएटिवली मज़ेदार बना दिया कि लगा ही नहीं मैं न्यूकमर हूं!

वामिका गब्बी ने कराया हॉट फोटोशूट

वामिका गब्बी ने सोशल मीडिया पर अपना नया बोल्ड फोटोशूट वीडियो शेयर कर फैंस के दिलों की धड़कनें बढ़ा दी हैं। लेवेंडर कलर की स्टाइलिश ड्रेस में वामिका बेहद ग्लैमरस और कॉन्फिडेंट नजर आ रही हैं। इस वीडियो को शेयर करते हुए वामिका ने सिर्फ एक पिंक हार्ट इमोजी कैप्शन में लिखा, लेकिन फैंस ने कमेंट सेक्शन को फायर इमोजीज़ और तारीफों से भर दिया है। तमन्ना भाटिया से लेकर कई फैन्स ने वामिका के इस हॉट अवतार की जमकर तारीफ की है। किसी ने उन्हें स्टनिंग' कहा तो किसी ने गॉर्जियस' लिखकर दिल का हाल बयां किया। वीडियो पर कुछ ही घंटों में लाखों लाइक्स आ चुके हैं, जो उनके पॉपुलैरिटी को साफ तौर पर दिखाते हैं।

वामिका गब्बी का ये फोटोशूट साबित करता है कि वह सिर्फ बेहतरीन अदाकारा ही नहीं, बल्कि एक फैशन आइकन भी हैं। उनका ये किलर कॉन्फिडेंस और स्टाइल सेंस फैंस को दीवाना बना देता है। सोशल मीडिया पर उनका ये वीडियो तेजी से वायरल हो रहा है और फैंस उनके इस ग्लैमरस अवतार को खूब पसंद कर रहे हैं।

वामिका गब्बी का ये लेटेस्ट वीडियो उनके स्टाइलिश और बेबाक अंदाज़ की शानदार मिसाल है। हर बार की तरह इस बार भी उन्होंने दिखा दिया कि कैसे सादगी और बोल्डनेस का परफेक्ट बैलेंस बनाया जाता है। वामिका के फैंस अब बेसब्री से उनके अगले प्रोजेक्ट्स और नए लुक्स का इंतजार कर रहे हैं, क्योंकि उन्होंने एक बार फिर साबित कर दिया है कि वो सिर्फ एक टैलेंटेड एक्ट्रेस ही नहीं, बल्कि सोशल मीडिया सेंसेशन भी हैं।

राष्ट्र को बचाना हो तो राष्ट्र भाषा से बचना पड़ेगा

विनीत नारायण

मलाही भाषा येत नाही। भाषा संवाद के लिए होती है, झगड़े उपद्रव के लिए नहीं। झगड़े उपद्रव के लिए लट्ठबाजी, गोलीबारी होती है। गले लगा लो तो बिना भाषा के भी संवाद हो जाता है।

राष्ट्र में महाराष्ट्र का होना गौरव और गरिमा की बात है। महाराष्ट्र की उत्कृष्ट सभ्यता संस्कृति है। इसे क्षुद्र स्तर पर न ले आने के लिए हम सजग सावधान रहें तो इसकी सभ्यता-संस्कृति पूरे विश्व में जगमगाती रहेगी। मराठी-गुजराती-हिन्दी-अंग्रेजी की यहां सब नदियां एक ही महासागर से जुडी हैं। इसलिए यहां संकीर्णता नहीं, उदारता ही प्रवाहमान होती है। सभ्यता-संस्कृति का दीप-स्तंभ बनती है। यह कहना है स्वामी चैतन्य कीर्ति का।

इस विषय में ओशो क्या कहते हैं = एक मित्र ने पूछा है कि क्या भारत में कोई राष्ट्र भाषा होनी चाहिए? यदि हां, तो कौन सी? राष्ट्र भाषा का सवाल ही भारत में बुनियादी रूप से गलत है। भारत में इतनी भाषाएं हैं कि राष्ट्र भाषा सिर्फ लादी जा सकती है, और जिन भाषाओं पर लादी जाएगी उनके साथ अन्याय होगा। भारत में राष्ट्र भाषा की कोई भी जरूरत नहीं है। भारत में बहुत-सी राष्ट्रभाषाएं ही होंगी और आज कोई कठिनाई भी नहीं है कि राष्ट्र भाषा जरूरी हो। रूस बिना राष्ट्र भाषा के काम चलाता है, तो हम क्यों नहीं चला सकते? आज तो यांत्रिक व्यवस्था हो सकती है संसद में, बहुत थोड़े खर्च से, जिसके द्वारा एक भाषा सभी भाषाओं में अनुवादित हो जाए, लेकिन राष्ट्र भाषा का मोह बहुत महंगा पड़ रहा है।

भारत की प्रत्येक भाषा राष्ट्र भाषा होने में समर्थ है। इसलिए कोई भी भाषा अपना अधिकार छोड़ने को राजी नहीं होगी, होना भी नहीं चाहिए।

लेकिन यदि हमने जबरदस्ती किसी भाषा को राष्ट्र भाषा बना कर थोपने की कोशिश की तो देश खंड-खंड हो जाएगा। आज देश के बीच विभाजन के जो बुनियादी कारण हैं, उनमें भाषा एक है। राष्ट्र भाषा बनाने का खयाल ही राष्ट्र को खंड-खंड में तोड़ने का कारण बनेगा। अगर राष्ट्र को बचाना हो तो राष्ट्र भाषा से बचना पड़ेगा और अगर राष्ट्र को मिटाना हो तो राष्ट्र भाषा की बात आगे भी जारी रखी जा सकती है। मेरी दृष्टि में भारत में जितनी भाषाएं बोली जाती हैं, सब राष्ट्र भाषाएं हैं, उनको समान आदर उपलब्ध होना चाहिए। किसी एक भाषा का साम्राज्य दूसरी भाषा पर बर्दाश्त नहीं किया जाएगा, वह भाषा चाहे हिन्दी हो और चाहे कोई और हो।

कोई कारण नहीं है कि तमिल, तेलुगू, बंगाली या गुजराती को हिन्दी दबाए। लेकिन गांधी जी के कारण जो कुछ बीमारियां इस देश में छूटीं, उनमें एक बीमारी हिन्दी को राष्ट्र भाषा का वहम देने की भी है। हिन्दी को यह अहंकार गांधी जी दे गए कि वह राष्ट्र भाषा है तो हिन्दी प्रांत उस अहंकार से परेशान हैं, और वे अपनी भाषा को पूरे देश पर थोपने की कोशिश में लगे हुए हैं। हिन्दी का साम्राज्य भी बर्दाश्त नहीं किया जा सकता है, तो किसी भाषा का नहीं किया जा सकता। सिर्फ संसद में हमें यांत्रिक व्यवस्था करनी चाहिए कि सारी भाषाएं अनुवादित हो सकें। और वैसे भी संसद कोई काम तो कोई करती नहीं है कि कोई अड़चन हो जाएगी। सालों तक एक-एक बात पर चर्चा चलती है, थोड़ी देर और चल लेगी तो कोई फर्क नहीं होने वाला है। संसद कुछ करती हो तो भी विचार होता कि कहीं कार्य में बाधा न पड़ जाए। कार्य में कोई बाधा पड़ने वाली नहीं मालूम होती। फिर मेरी दृष्टि यह भी है कि यदि हम राष्ट्र भाषा को थोपने का उपाय न करें तो शायद बीस- पच्चीस वर्षों में कोई एक भाषा विकसित हो और धीरे-धीरे राष्ट्र के प्राणों को घेर ले। वह भाषा हिन्दी नहीं होगी, वह भाषा हिन्दुस्तानी होगी। उसमें तमिल के शब्द भी होंगे, तेलुगू के भी, अंग्रेजी के भी, गुजराती के भी, मराठी के भी। वह एक मिश्रित नई भाषा होगी जो धीरे-धीरे भारत के जीवन में से विकसित हो जाएगी। लेकिन, अगर कोई शुद्धतावादी चाहता हो कि शुद्ध हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाना है, तो यह सब पागलपन की बात है। इससे कुछ हित नहीं हो सकता।' यह तो थी ओशो की सोच।

महाराष्ट्र, एक ऐसा राज्य है जो अपनी सांस्कृतिक समृद्धि और मराठी भाषा के लिए जाना जाता है, आज भाषा विवाद के कारण चर्चा में है। मराठी, जो इस राज्य की आत्मा है, न केवल एक भाषा है, बल्कि महाराष्ट्र की पहचान, इतिहास और गौरव का प्रतीक भी है। हाल के वर्षों में मराठी भाषा के उपयोग और सम्मान को लेकर कई विवाद सामने आए हैं, जो सामाजिक-राजनीतिक स्तर पर तनाव का कारण बन रहे हैं। महाराष्ट्र में मराठी को प्राथमिकता देने की मांग लंबे समय से चली आ रही है। विशेष रूप से मुंबई जैसे महानगरों में, जहां विविधता अपनी चरम सीमा पर है, मराठी भाषा को कई बार उपेक्षित महसूस किया जाता है। गैर-मराठी भाषी समुदायों की उपस्थिति और वैश्वीकरण के प्रभाव ने मराठी के उपयोग को कुछ हद तक सीमित किया है। यह स्थिति स्थानीय लोगों में असंतोष को जन्म देती है, जो अपनी भाषा और संस्कृति की रक्षा के लिए संघर्ष कर रहे हैं। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं, बल्कि संस्कृति, साहित्य और परंपराओं की वाहक भी है। मराठी साहित्य में संत ज्ञानेर से लेकर आधुनिक लेखकों तक का योगदान शामिल है, जो विश्व स्तर पर अपनी गहराई के लिए जाना जाता है। फिर भी, सरकारी कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों और सार्वजनिक स्थानों पर मराठी के उपयोग में कमी देखी जा रही है।

यह स्थिति मराठी भाषी समुदाय के लिए चिंता का विषय है। राज्य सरकार ने मराठी को अनिवार्य करने के लिए कुछ कदम उठाए हैं, जैसे स्कूलों में मराठी पढ़ाई को बढ़ावा देना और सरकारी कार्य में इसका उपयोग सुनिश्चित करना। लेकिन इन प्रयासों को और प्रभावी करने की आवश्यकता है। साथ ही, मराठी के प्रति सम्मान को बढ़ावा देने के लिए सामाजिक जागरूकता भी जरूरी है। गैर-मराठी भाषी लोगों को भी मराठी सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ताकि सामाजिक एकता मजबूत हो। मराठी भाषा या देश की अन्य भाषा का संरक्षण केवल एक राज्य की जिम्मेदारी नहीं, बल्कि यह हमारी साझा सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है। विवादों को सुलझाने के लिए संवाद और सहयोग जरूरी है। मराठी और अन्य भाषाओं को उनका उचित स्थान दिलाने के लिए हमें एकजुट होकर प्रयास करना होगा ताकि सभी भाषाएं अपनी गरिमा और गौरव के साथ फलती-फूलती रहें।

(लेख में विचार निजी हैं)

विग्नेश राजा की फिल्म से धनुष की पहली झलक आई सामने

अभिनेता धनुष को पिछली बार फिल्म कुबेर में देखा गया था, जिसमें उन्होंने एक भिखारी की भूमिका निभाई थी। फिल्म में धनुष के काम को काफी सराहा गया था, लेकिन बॉक्स ऑफिस पर यह कुछ खास कमाल नहीं दिखा सकी। आने वाले समय में धनुष कई बेहतरीन फिल्मों में नजर आएंगे। इन्हीं में एक निर्देशक विग्नेश राजा की फिल्म भी है, जिसका अस्थायी नाम फिलहाल डी54 रखा गया है। अब डी54 से धनुष की पहली झलक सामने आ गई है।

सामने आए पोस्टर में धनुष का धांसू अवतार दिख रहा है। निर्माताओं ने लिखा, कभी-कभी खतरनाक बने रहना ही जीवित रहने का एकमात्र तरीका होता है।

धनुष ने पोर थोझिल फेम विग्नेश राजा द्वारा निर्देशित इस फिल्म की शूटिंग शुरू कर दी है। फिल्म में ममिथा बैजू मुख्य भूमिका में हैं, जबकि जयराम, केएस रविकुमार, सूरज वेंजरामूडु, करुणास और पृथ्वी पंडिराज भी महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं।

सू- दोकू क्र.29

	7			4		3		
2			3			9		4
	6			2				
3		1			7		4	
	2			1			6	
8			9		4			1
		2		3		7		
1			7		2	4		3
	5	3		8			7	2

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र. 28 का हल

9	2	8	3	1	5	7	4	6
4	1	6	8	9	7	2	5	3
7	3	5	4	6	2	8	1	9
2	7	3	9	8	1	4	6	5
5	4	1	6	7	3	9	2	8
6	8	9	2	5	4	1	3	7
3	6	2	7	4	9	5	8	1
8	5	7	1	2	6	3	9	4
1	9	4	5	3	8	6	7	2

फीस में बेजा बढ़ोतरी तार्किक नहीं

दिल्ली विश्वविद्यालय में सत्र 2025-26 में पढ़ाई महंगी होने जा रही है। विश्वविद्यालय के विभिन्न पाठय्क्रमों की फीस में जल्द ही इजाफा हो सकता है।

विश्वविद्यालय ने अपने अंडरग्रेजुएट कोर्सेज की फीस में इजाफा करने का मन बना लिया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के पांच वर्षीय बीए एलएलबी और बीबीए एलएलबी कोर्स की फीस दो लाख रुपये के पार चली जाएगी। इन दो कोर्सेज की फीस बढ़ा कर दो लाख 8 हजार 550 रुपये की जा सकती है।

एमए और पीएचडी कोर्सेज की फीस में भी इजाफा होगा। इसी प्रकार कई अन्य कोर्सेज में भी बढ़ोतरी की जानी है। बेशक, उच्च शिक्षा में इजाफा छात्रों और उनके अभिभावकों पर खासा बोझ बढ़ाने वाला साबित होगा। वैसे ही हमेशा से उच्च शिक्षा का खर्च आम परिवारों की पहुंच से बाहर ही रहा है।

इंजीनियरिंग, मेडिकल और प्रबंधन जैसे पाठय्क्रमों में आम परिवार का छात्र सफल भी रहता है, तो अपनी प्रतिभा के बल पर स्कॉलरशिप आदि पाकर ही सफल हो पाता है। यदि फीस आदि में सहूलियत न मिले तो यकीनन इन पाठय्क्रमों का शिक्षण व्यय आम परिवार की पहुंच से बाहर है।

अब लॉ के अलावा बंगाली जैसी भाषाओं के पाठय्क्रमों की फीस बढ़ा कर शिक्षा को महंगा करने का फैसला लिया जा चुका है। एक केंद्रीय विश्वविद्यालय में शिक्षण खर्च और एक निजी विश्वविद्यालय में होने वाले पढ़ाई पर खर्च में कोई ज्यादा अंतर नहीं रह जाएगा।

यह समाज के बड़े तबके के हित पर कुठाराघात ही कहा जाएगा। इस प्रकार से फीस में बढ़ोतरी की तैयारी से लगता है कि सरकार ने शिक्षा के क्षेत्र में निजीकरण की दिशा में अपने कदम और तेज करने का मन बना लिया है।

फीस बढ़ोतरी संबंधी प्रस्ताव को विश्वविद्यालय की कार्यकारी परिषद ने हरी झंडी दे दी है। संभवत: 2025-26 के सत्र से इसे कार्यान्वित भी कर दिया जाए। एक ऐसे देश में जहां बड़ी आबादी जैसे-तैसे मिनिमम स्तर पर गुजारा कर पा रही है, उसके नौनिहालों के आगे बढ़ने की संभावनाओं को कुंद करना उचित नहीं कहा जा सकता।

कहना न होगा कि विश्वविद्यालय प्रशासन अपने महंगे होते बंदोबस्त के नाम पर अपने फैसले को जस्टिफाई करेगा। लेकिन एक केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा मात्र इस तर्क के सहारे फीस में बेजा बढ़ोतरी को तार्किक नहीं कहा सकता। सभी वगरे के हितों का ध्यान रखा जाना चाहिए।(आरएनएस)

1 अगस्त को सिनेमाघरों में रिलीज होगी धड़क 2

सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी की बहुप्रतीक्षित फिल्म धड़क 2 का दर्शक बड़ी ही बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं। यह फिल्म इस साल की बहुचर्चित फिल्मों में से एक हैं। खास बात यह है कि यह पहला मौका होगा, जब सिद्धांत और तृप्ति पर्दे पर साथ दिखाई देंगे। अब निर्माताओं ने धड़क 2 का नया गाना प्रीत रे जारी कर दिया है, जिसे दर्शन रावल, जोनिता गांधी और रोचक कोहली ने मिलकर गाया है।

प्रीत रे गाने में तृप्ति और सिद्धांत एक-दूजे के साथ डांस करते नजर आ रहे हैं। दोनों एक-दूजे के प्यार में डूबे दिख रहे हैं। गाने के बोल गुरप्रीत सैनी ने लिखे हैं। धड़क 2 के निर्देशन की कमान शाजिया इकबाल ने संभाली है, वहीं करण जौहर फिल्म के निर्माता हैं। यह फिल्म 1 अगस्त, 2025 को सिनेमाघरों में दस्तक देने को तैयार है। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना अजय देवगन की सन ऑफ सरदार 2 से होगा। धर्मा प्रोडक्शंस की फिल्म धड़क 2 में सिद्धांत चतुर्वेदी और तृप्ति डिमरी ने मुख्य भूमिका निभाई है। फिल्म का निर्देशक शाजिया इकबाल ने किया है। इस फिल्म का निर्माण करण जौहर, उमेश कुमार बंसल, अदार पूनावाला, अपूर्व मेहता, मीनू अरोरा, सोमेन मिश्रा और प्रगति देशमुख ने मिलकर किया है। फिल्म की कहानी और संवाद राहुल बडवेलकर और शाजिया इकबाल ने लिखें हैं।

आज देश में नाग पंचमी का त्योहार बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है, सवेरे से ही मंदिरों में भक्तों का ताता लगा है, कोई कालसर्प दोष की पूजा कर रहा है कोई गृह दोष शांति यग करा रहे हैं। नाग प्रतिमाओं को दूध, खीर का भोग लगाएं जा रहे हैं, वही आज गढ़ी कैंट स्थित श्री टपकेश्वर महादेव मंदिर में सुप्रसिद्ध भागवताचार्य सुभाष जोशी द्वारा प्रदेश की सुख शांति के लिए विशेष अनुष्ठान किया गया जिसमें दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से चांदी के नाग नागिन को अभिषेक कराया गया और मंत्रोच्चारण और विधिविधान से पुजा संपन्न हुई, तदुपरांत मंदिर के पुजारी दिगम्बर भरत गिरी जी से आशीर्वाद लिया जिसमें श्री महाकाल सेवा समिति के अध्यक्ष रोशन राणा व अन्य सदस्य उपस्थित रहे।

मारपीट मामले में दोनों पक्षों की तरफ से मुकदमा दर्ज

संवाददाता

देहरादून। मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने के मामले में पुलिस ने दोनों पक्षों का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार नेशविला रोड निवासी सुनीता सोनकर ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उनके पडोस में रहने वाले राजेन्द्र सोनकर व उसकी पत्नी ने उसके पति के साथ गाली गलौच करते हुए उसके पति पर पत्थर से हमला कर गम्भीर रूप से घायल कर दिया। वहीं दूसरे पक्षर की तरफ से राजेन्द्र कुमार ने ज्ञान चन्द, संजीत सोनकर, प्रमोद कुमार, सुनीता व नितिश उर्फ शाने के खिलाफ एक राय होर उसके व उसकी पत्नी के साथ मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने का मुकदमा दर्ज कराया। पुलिस ने दोनों पक्षों का मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

नाबालिग लापता

संवाददाता

देहरादून। नाबालिग को बस से घर के लिए जाना व घर ना पहुंचने पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनुसार आर्दश विहार हरबर्टपुर निवासी व्यक्ति ने विकासनगर कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसकी पतनी ने उसकी बहन को सहसपुर बैरियर से बस में हरियाणा के लिए बैठाया था। लेकिन वह ना तो हरियाणा घर पहुंची और ना ही वापस आयी। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

दहेज के लिए प्रताडित करने पर पति सहित चार पर मुकदमा

देहरादून। दहेज के लिए प्रताडित करने पर पति सहित चार लोगों पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी। प्राप्त जानकारी के अनसार क्लेमनटाउन निवासी नाहिद परवीन ने क्लेमनटाउन थाने में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि उसका विवाह तेलीवाला निवासी वसीम अहमद के साथ हुआ था। विवाह के कुछ दिनों बाद से ही उसके ससुर लियाकत, सास समीम बानो ननद फिरदौस उसको दहेज के लिए प्रताडित करने लगे थे। उसके परिवार वालों के समझाने के बाद भी उनके व्यवहार में कोई परिवर्तन नहीं आया। जब उनकी मांग पूरी नहीं हुई तो उन्होंने उसके मारपीट कर घर से निकाल दिया। पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

नई शिक्षा नीति छात्रों को 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए बनाएगी सक्षमः जोशी

संवाददाता

देहरादून। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि नई शिक्षा नीति छात्रों को 21वी सदी की चुनौतियों के लिए सक्षम बनाएगी।

आज यहां कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने आज पीएम श्री केन्द्रीय विद्यालय बीरपुर, देहरादून में आयोजित नई शिक्षा नीति 2020 की पाँचवीं वर्षगांठ कार्यक्रम में प्रतिभाग किया। इस अवसर पर मंत्री गणेश जोशी ने छात्र-छात्राओं द्वारा विभिन्न कलाओं में तैयार किए गए रचनात्मक कार्यों का अवलोकन तथा उत्कृष्ट पीएम श्री विद्यालय बीरपुर के पट्टिका का अनावरण भी किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति 2020 ने 34 वर्ष पुरानी राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 को प्रतिस्थापित कर भारत की शिक्षा प्रणाली में एक परिवर्तनकारी बदलाव की शुरुआत की है। मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि इससे पूर्व भारत में केवल दो शिक्षा नीतियां वर्ष 1968 और 1986 में लागू की गई थीं। उन्होंने कहा कि नई शिक्षा नीति का उद्देश्य छात्रों को 21वीं सदी की वैश्विक चुनौतियों के लिए तैयार करना है। इस

नीति के तहत कक्षा 6 से ही व्यावसायिक शिक्षा की शुरुआत की जाएगी, जिससे छात्र विभिन्न ट्रेडों, कौशलों और उद्यमिता के लिए तैयार होंगे। उन्होंने कहा कि नीति में डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देने और शिक्षण में तकनीकी समावेशन हेतु राष्ट्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी मंच की स्थापना का भी प्रावधान किया गया है। यह नीति छात्रों के शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक विकास पर जोर देती है और उनमें आलोचनात्मक सोच और रचनात्मकता को बढ़ावा देती है।

इस दौरान कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने बच्चों को जीवन में सफल होने के 05-डी के मूल मंत्र भी दिए और बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए भी प्रेरित किया। कैबिनेट मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि पढ़ाई के साथ-साथ खेलों का होना भी जरूरी है। उन्होंने कहा कि शिक्षा के साथ साथ नैतिक शिक्षा और चरित्र शिक्षा का होना भी बेहद आवश्यक है। उन्होंने कहा कि आधुनिक बनना है तो विचारों में आधुनिक बने। उन्होंने विश्वास जताते हुए कहा कि यह नीति भारत की शिक्षा प्रणाली में व्यापक बदलाव लाएगी। इस अवसर पर अध्यक्ष वीएमसी कर्नल अतीत हेसन, प्रधानाचार्य बसंती खम्पा, उप प्रधानाचार्य अल्का थंड़ियाल, आरती उनियाल, डी. एस लखेड़ा, एनसीसी अधिकारी अनुज कुमार सहित छात्र छात्राएं उपस्थित रहे।

तीज महोत्सव धूमधाम से मनाया

हमारे सवादाता

हरिद्वार। श्री वैश्य बंधु समाज, मध्य क्षेत्र हरिद्वार के तत्वावधान में आज तीज महोत्सव का आयोजन अत्यंत धूमधाम और पारंपरिक उत्साह के साथ किया गया। हर वर्ष की भांति इस बार भी कार्यक्रम में समाज की महिलाओं ने भारी संख्या में भाग लिया और विविध रंगों में रंगे इस आयोजन ने एक सांस्कृतिक उत्सव का रूप ले लिया।

महोत्सव में महिलाओं ने पारंपरिक परिधानों में भाग लिया और शिव पार्वती की मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियाँ दीं। साथ ही मौसम को देखते हुए विभिन्न प्रकार के रोचक खेलों का आयोजन भी किया गया, जिनमें सभी महिलाओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस हर्षोल्लास के बीच, आयोजकों ने सामाजिक

संवेदनशीलता का परिचय देते हुए मनसा देवी में हुई दुखद दुर्घटना को ध्यान में रखते हुए मृतकों की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन रखा गया।

कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण रहा 'तीज क्वीन प्रतियोगिता और शिव पार्वती नृत्य, शिप्रा अग्रवाल एवं सपना गर्ग को उनकी प्रस्तुति, परिधान और गरिमामयी उपस्थिति के आधार पर तीज क्वीन चुना गया। विजेताओं को उपहार व सम्मान के साथ मंच पर सम्मानित किया गया। इस कार्यक्रम में संस्थापक शशि अग्रवाल ,अध्यक्ष पिंकी अग्रवाल ,पूर्व अध्यक्ष रितु तायल महामंत्री ,शालिनी अग्रवाल कोषाध्यक्ष ,अर्चना अग्रवाल ,ललतेश गुप्ता ,नामिता गुप्ता ,सीमा अग्रवाल ,पूजा अग्रवाल ,राधिका अग्रवाल ,विनती जैन ,मीणा गोयल ,मधु जैन ,मोहिता गुप्ता ,संध्या गुप्ता ,मोहिनी गुप्ता ,अमिता जैन सहित कई लोग मौजूद रहे।

जांच कमेटी गठित कर दोषियों पर हो कार्यवाहीः मर्तोलिया

हमारे संवाददाता

मुनस्यारी। मुनस्यारी बचाओं संघर्ष समिति ने ग्राम पंचायत टांगा में गरारी से गिरकर गंभीर रूप से घायल हुई महिला के मामले में मुख्यमंत्री को पत्र लिखा। उन्होंने कहा कि तकनीकी रूप से खराब गरारी के लिए जिम्मेदार तथा 10 वर्षों से एक मोटर पुलिया नहीं बनने के जिम्मेदार अधिकारियों के खिलाफ कठोर कार्रवाई की जाय। घायल महिला को तत्काल आपदा मद से मुआवजा दिया जाने की भी मांग उठाई है। समिति ने कहा कि 15 दिन के भीतर उचित कार्रवाई नहीं होने पर सरकार, प्रशासन तथा विभाग के खिलाफ आंदोलन किया जाएगा।

समिति के संयोजक तथा पूर्व जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने आज ईमेल के माध्यम से प्रदेश के मुख्यमंत्री, मुख्य सचिव और जिलाधिकारी को ज्ञापन भेजा। उन्होंने कहा कि 24 जुलाई को तकनीकी रूप से खराब गरारी से गिरकर टांगा निवासी श्रीमती यशोदा देवी पत्नी प्रहलाद सिंह नदी में गिरकर गंभीर रूप

❑10 वर्षो में क्यों नहीं बना मोटर पुल, जबाब दे सरकार

से घायल हो गई थी। उन्होंने कहा कि ग्रामीण निर्माण विभाग डीडीहाट की जिम्मेदारी मेंयह गरारी चल रही है। विभाग द्वारा समय-समय पर गरारी की तकनीकी स्थिति की जांच क्यों नहीं की गई। उन्होंने कहा कि लोक निर्माण विभाग द्वारा टांगा नदी के आर-पार मोटर मार्ग का निर्माण कर दिया गया है। नदी में 10 वर्षों से एक मोटर पुलिया का निर्माण नहीं किया गया है। इस कारण से लोगों की मजबूरी है कि बरसात के मौसम में गरारी से आवागमन करते है।

उन्होंने कहा कि मोटर पुलिया के निर्माण में किस स्तर से विलंब हो रहा है, इसकी भी जांच की जानी चाहिए। तकनीकी रूप से गरारी खराब होने के कारण महिला नीचे नदी में गिरी है, इसलिए उसे आपदा मद से मुआवजा दिया जाना चाहिए। उन्होंने मुख्यमंत्री से जिलाधिकारी पिथौरागढ़ को आदेशित करने की मांग उठाई कि तत्काल जिला स्तरीय जांच टीम बनाकर तीन बिंदुओं की जांच कर उसकी रिपोर्ट 15 दिन के भीतर ग्राम पंचायत टांगा को उपलब्ध कराने की सलाह दी है। उन्होंने कहा कि अगर राज्य सरकार द्वारा इस मामले को गंभीरता से नहीं लिया गया तो स्थानीय ग्राम वासियों को साथ लेकर सरकार के खिलाफ आंदोलन किया जाएगा।

केंद्रीय विद्यालय का मुख्यमंत्री ने किया लोकार्पण

संवाददाता

खटीमा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने केन्द्रीय विद्यालय खटीमा का लोकार्पण किया।

आज यहां मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 26.23 करोड़ से नवनिर्मित केंद्रीय विद्यालय खटीमा का लोकार्पण किया। उन्होंने माँ सरस्वती की पूजा अर्चना व दीप प्रज्जवलित कर लोकार्पण कार्यक्रम शुभारम्भ किया। कार्यक्रम में पहुँचने पर केंद्रीय विद्यालय परिवार ने अंगवस्त्र व स्मृति चिन्ह भेंट कर मुख्यमंत्री का स्वागत किया व केंद्रीय विद्यालय निर्माण के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में विद्यालय के बच्चों द्वारा सरस्वती वंदना एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गए।

अखिल भारतीय शिक्षा समागम कार्यक्रम के अंतर्गत केंद्रीय विद्यालय भवन के लोकार्पण कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज का यह क्षण हम सभी के लिए अत्यंत गर्व और हर्ष का विषय है कि जब देश में शिक्षा क्षेत्र में आई नई क्रांति के 5 वर्ष पूर्ण हो रहे हैं, ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर हमारे खटीमा में भी ज्ञान और विज्ञान के नए युग का सूत्रपात हो रहा है। आज के इस विशेष अवसर पर हमारे खटीमा को केंद्रीय विद्यालय की सौगात देने के लिए मैं सभी खटीमा वासियों की ओर से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान का हृदयतल से आभार व्यक्त करता हूँ। उन्होंने कहा कि केंद्रीय विद्यालय की शिक्षा हमारी सेना, अर्धसैनिक बलों तथा उन तमाम कार्मिकों के बच्चों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है, जिनका देश के विभिन्न हिस्सों में स्थानांतरण होता रहता है। यदि मेरे छात्र जीवन के दौरान खटीमा में केंद्रीय विद्यालय होता, तो शायद मैं, भी इसी विद्यालय का छात्र होता और मुझे भी शिक्षा के लिए खटीमा से बाहर नहीं जाना पड़ता। इसलिए विधायक रहते हुए मैंने खटीमा में केंद्रीय विद्यालय की स्थापना हेतु हर संभव प्रयास किए और ये हम सभी के लिए अत्यंत गर्व का विषय है कि आज इस विद्यालय का लोकार्पण स्वयं देश के यशस्वी शिक्षा मंत्री के कर कमलों द्वारा संपन्न हो रहा है।

सीएम धामी ने कहा कि इतना ही नहीं, हमने एक ओर जहां राजकीय महाविद्यालय खटीमा में एमकॉम और एमएससी की कक्षाएं शुरू कराई, वहीं जनजाति बाहुल्य क्षेत्र में एकलव्य विद्यालय का संचालन भी प्रारंभ किया। उन्होंने कहा कि विकास कार्यों की लिस्ट इतनी लंबी है कि सभी के नाम ले पाना भी संभव नहीं है लेकिन मैं, इतना अवश्य कहूंगा कि आपका ये बेटा आगे भी खटीमा के विकास में कोई कमी नहीं आने देगा।

सीएम धामी ने कहा कि हम राज्य से भ्रष्टाचार रूपी दीमक को जड़ से समाप्त करने के लिए ष्जीरो टॉलरेंसश की नीति के तहत कार्य कर रहे हैं। इसी का परिणाम है कि पिछले तीन वर्षों में हमने भ्रष्टाचार में लिप्त आईएस, पीसीएस सहित करीब 200 से अधिक लोगों को जेल की सलाखों के पीछे पहुँचाया है।

कार का शीशा तोड किया हमला

संवाददाता

देहरादून। कार का पीछा कर शीशा तोडने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकारी के अनुसार 27 जुलाई को थाना कोतवाली नगर देहरादून पर विनीत सिंघल ने मुकदमा दर्ज कराया था कि कुछ लोगों ने स्कूटी से उनका पीछा कर उन पर हमला किया तथा उनकी कार का शीशा तोड़ दिया, जिस पर थाना कोतवाली नगर पर संबंधित धाराओं में अभियोग पजीकृत किया गया।

मुकदमें की जांच के दौरान सीसीटीवी फुटेजों की जांच से इस बात की पुष्टि हुई कि विनीत द्वारा पटेलनगर क्षेत्र में यू- टर्न लेने के दौरान अपनी गाड़ी से

आरोपियों की स्कूटी को टक्कर मारी गयी थी, जिस कारण स्कूटी सवार लड़कों द्वारा आवेश में आकर विनीत की गाड़ी को लाल पुल पर रोकने का प्रयास किया गया, पर विनीत द्वारा मौके से गाड़ी भगाने पर उक्त लड़कों द्वारा विनीत की गाड़ी का पीछा किया तथा कांवली रोड पर ट्रैफिक धीमा होने तथा भीड़ भाड़ होने के कारण विनीत की कार के रुकने पर उक्त युवकों द्वारा पीछे से आते हुए विनीत की कार के शीशे तोड़ दिये। प्रकाश में आये सभी तथ्यों की पुलिस जांच के दौरान पुष्टि भी हुई।

उक्त घटना रोड रेज की है, जिसमें पुलिस द्वारा त्वरित कार्यवाही करते हुए तत्काल आरोपियों की तलाश कर उनके विरुद्ध वैधानिक कार्यवाही की गई है। प्रकरण में किसी अन्य बात या घटना में किसी भी बदमाश का होना नहीं पाया गया है, दोनों पक्ष देहरादून के ही रहने वाले है।

बस व ट्रक की टक्कर से 18 कावड़ियों की मौत, 20 घायल

हमारे संवाददाता

देवघर। कांवडियों की बस व ट्रक की टक्कर के चलते जहां 18 कांवड़ियों की मौत हो गयी वही 20 लोग घायल हुए है। सूचना मिलने पर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर मृतकों के शवों को कब्जे में लेकर घायलों को अस्पताल पहुंचाया जहां उनका उपचार जारी है। मामला गोड्डा-देवघर मुख्य मार्ग पर मोहनपुर थाना क्षेत्र के जमुनिया मोड़ के पास का है।

जानकारी के अनुसार आज सुबह करीब 5.30 बजे यह हादसा हुआ है। सूचना मिलने पर मोहनपुर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और राहत-बचाव कार्य शुरू किया गया साथ ही स्थानीय लोगों की मदद से घायलों को एम्बुलेंस के जरिए मोहनपुर सीएचसी भेजा गया। स्थानीय लोगों का कहना है कि हादसे में 20 से ज्यादा श्रद्धालु घायल हो गए हैं। हादसा इतना जबरदस्त था कि बस के परखच्चे उड़ गए। हादसे पर स्थानीय बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे ने दुख जाताया है।

धार्मिक स्थलों में भीड़ प्रबंधन के लिए तकनीक का भी प्रयोग किया जाएः मुख्य सचिव

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। मुख्य सचिव आनन्द बर्द्धन ने मंगलवार को सचिवालय स्थित अपने सभागार में प्रदेश के महत्त्वपूर्ण धार्मिक स्थलों में श्रद्धालुओं की सुरक्षा, भीड़ प्रबन्धन आदि के सम्बन्ध में वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक की। मुख्य सचिव ने कहा कि हरिद्वार के मनसा देवी में श्रद्धालुओं में हुई भगदड़ जैसी घटनाओं पर काबू पाने के लिए प्रदेश के ऐसे सभी धार्मिक स्थलों, जहाँ महत्त्वपूर्ण दिवसों में श्रद्धालुओं की अत्यधिक भीड़ के कारण भगदड़ जैसी घटनाओं की आशंका बनी रही है, को चिन्हित कर उन में अंशकालिक एवं दीर्घकालिक व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं।

मुख्य सचिव ने कहा कि धार्मिक स्थलों के मार्गों में सार्वजनिक स्थलों को अतिक्रमण मुक्त कर मार्गों का चौड़ीकरण कराया जाए। मार्गों से अतिक्रमण हटाने के लिए लगातार अभियान चलाए जाएं। उन्होंने कहा कि धार्मिक स्थलों में भीड़ प्रबंधन के लिए तकनीक का प्रयोग भी किया जाए। कहा कि धार्मिक स्थलों में अत्यधिक भीड़ होने पर मार्गों में श्रद्धाओं को रोके जाने हेतु स्थल तैयार किए जाएँ।

मुख्य सचिव ने कहा की प्रत्येक धार्मिक स्थल के लिए रूट और सर्कुलेशन प्लान तैयार किया जाए, ताकि धार्मिक स्थलों में अचानक भीड़ ना हो। भीड़

होने की संभावना को देखते हुए श्रद्धालुओं को रोके जाने के लिए पूर्वनिर्धारित स्थानों में रोका जाए। मुख्य सचिव ने श्रद्धालुओं

●मुख्य सचिव ने ली धार्मिक स्थलों की सुरक्षा व्यवस्थाओं को लेकर वरिष्ठ अधिकारियों के साथ बैठक

की संख्या का आंकलन करने के लिए तकनीक का उपयोग करते हुए भीड़ प्रबंधन तंत्र तैयार किए जाने के निर्देश दिए हैं। इसके लिए सभी प्रकार की भौतिक एवं तकनीकी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जाएं।

मुख्य सचिव ने अधिक महत्त्वपूर्ण मंदिरों को प्राथमिकता पर लेते हुए पहले चरण में मनसा देवी, चण्डी देवी, नीलकंठ, कैंचीधाम और पूर्णागिरि मंदिर का विशेषज्ञों के माध्यम से विश्लेषण करा लिया जाए। स्थानीय प्रशासन एवं धार्मिक स्थलों के हितधारकों को विशेषज्ञों की टीम को हर प्रकार की सहायता उपलब्ध कराए जाने की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि यह विशेषज्ञों की टीम मंदिर क्षेत्र का विश्लेषण कर भीड़ प्रबंधन, निकासी योजना और बॉटल नेक एरिया के लिए सिविल इंजीनियरिंग और तकनीकी पहलुओं का परीक्षण कर विभिन्न जगहों पर रुकने के स्थान आदि के लिए एक प्रॉपर प्लान और प्रॉपर एसओपी तैयार करेगी।

इस अवसर पर पुलिस महानिदेशक दीपम सेठ, प्रमुख सचिव आर के सुधांशु सचिव शैलेश बगौली, धैराज सिंह गरब्याल, आईजी गढ़वाल राजीव स्वरूप एवं वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग में माध्यम से कमिश्नर कुमायूँ श्री दीपक रावत सहित अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मोटरसाईकिल चोरी

संवाददाता

देहरादून। चोरों ने दून अस्पताल से मोटरसाईकिल चोरी करने के मामले में पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

प्राप्त जानकार के अनुसार कलियर शरिफ हरिद्वार निवासी गुलशेर ने कोतवाली में मुकदमा दर्ज कराते हुए बताया कि वह किसी काम से दून अस्पताल आया था। उसने अपनी मोटरसाईकिल अस्पताल के गेट के बाहर खडी की थी। लेकिन जब वह थोडी देर बाद वापस आया तो उसकी मोटरसाईकिल अपने स्थान से गायब थी।

पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।